

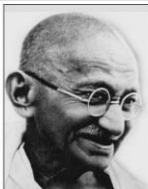
मुंबई की इस भाग-दौड़ भरी जिंदगी में लोकल ही वह माध्यम है जो सस्ता और द्रुत गतिका साधन है। रोज़ ही तरह में भी अन्य लोगों की तरह लोकल में सवार हुई। जल्द बाजी में मैं रोज़ के कम्पार्टमेंट को छोड़ विकलांग डिब्बे के पास के लेडिज कम्पार्टमेंट में चढ़ गई, स्टेशन पर रुकते ही चंद सेकंड में गाड़ी भर गई। स्टेशन पर रुकते ही चंद सेकंड में गाड़ी भर गई। लेकिन बाजू के डिब्बे के शोर-शराबे के कारण ध्यान उधर गया। ये हेंडीकेप डिब्बा है, जो हेंडीकेप नहीं है उतर जाएँ, लेकिन भीड़ पर कोई असर नहीं, खचाखच भरी हुई गाड़ी चल पड़ी। अगले स्टेशन पर कुछ विकलांग जो सचमुच विकलांग थे, चढ़ नहीं पा रहे थे। फिर कई आवाजें, इसी उद्देश्य से बड़बड़ा रहे थे कि अच्छे भले लोग चढ़ जाते हैं, हम विकलांगों को चढ़ने को नहीं मिलता। बिना किसी प्रतिक्रिया के शोर शराबे में गाड़ी चल पड़ी। विकलांग प्लेटफार्म पर छूट गए। अगले स्टेशन पर फिर विकलांगों ने खीझ भरे स्वर में कहा- हम पर दया करो, हमारे विकलांग डिब्बे में मत चढ़ो, कम से कम इतनी सुविधा तो हमारे लिए छोड़ दो। लेकिन दूसरी ओर भीड़ जस की तस बल्कि डिब्बा पहले से भी ज्यादा भर गया। मेरे दिमाग में विचार काँधा कि क्या एक ट्रेन के, एक डिब्बे में इतने ज्यादा विकलांग हैं कि विकलांग भी विकलांग डिब्बे में चढ़ नहीं पाते हैं? सचमुच विकलांगता की स्थिति भयावह है। मेरे विचारों



की यह श्रृंखला चालू ही थी कि अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकी और चेन खींच दी गई। शोरशराबा, धक्का-मुक्की, अपशब्द और धमकी भरे शब्दों का, ऊलजलूल भाषाओं का प्रवाह होने लगा। गाड़ी प्लेटफार्म पर खड़ी थी, मेरे सहित कई यात्री गाड़ी के विलम्ब से परेशान थे। कुछ ही मिनटों में उपरोक्त दृश्य के कारण विकलांग डिब्बा 80% खाली हो गया था। तो इसका मतलब उस डिब्बे में वे बेशर्म यात्री थे, जो विकलांग नहीं थे। अब डिब्बा खाली-खाली था। जिसमें सचमुच अंध, विकलांग, हाथों में प्लास्टर लगे, बीमार यात्री दिखाई दिये। इस हकीकत से मैं सिहर उठी। मैं सोचने पर मजबूर हो गई कि कौन सचमुच विकलांग है? एक ओर तो वे लोग जिन्हें वाकई कुदरत ने विकलांग या बीमार बनाया है या फिर वे जो स्वस्थ शरीर के मानसिक विकलांग हैं, जो सर्वसम्पन्न होते हुए भी विकलांगों की सुविधा पर कब्जा कर लेते हैं। तो फिर विकलांग कौन है? जो कुदरती विकलांग है वो? नहीं वो विकलांग नहीं हैं, क्यों कि उनमें हिम्मत है, जिद है, परिस्थितियों पर विजय पाने की। विकलांग तो वे हैं जो असंवेदनशील हैं, जिनकी मानसिकता विकलांग है। वो मजबूर विकलांगों से भी ज्यादा विकलांग है, मजबूर है। सच में तरस आता है उन स्वस्थ शरीरों की मानसिक विकलांगता को देखकर।

✍ श्रीमती पूजा संजय पवार, कार्यालय अधीक्षक, परिवहन विभाग, वर्तगिट

श्री मोहनदास करमचंद गांधी या महात्मा गांधी या बापू, एक महान व्यक्तिवत् तथा एक महान पुरुष जिसने भारत देश को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी दिलाई। इनका नाम आज भी हर समाज, हर जाति, हर घर तथा प्रत्येक व्यक्ति द्वारा बड़े सम्मान से लिया जाता है। अब सोचने का विषय है कि आखिर ऐसे महान व्यक्ति में ऐसी क्या विशेषता थी जिसके कारण उनका नाम इतिहास के पन्नों में अमर हो गया है। यह विशेषता थी उनकी विचारधारा जिसे बाद में गांधीवादी विचारधारा के नाम से जाना जाने लगा। गांधीवादी विचारधारा का मुख्य आधार था अहिंसा। उनकी विचारधारा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बात रखने का अधिकार है किंतु पूरे सम्मान तथा अहिंसक रूप से। आन्दोलन हो लेकिन कोई हिंसा न हो। गांधी जी के अनुसार यदि कोई अहिंसक एक गाल पर तमाचा मारे तो आप अपना दूसरा गाल तमाचा खाने के लिए सामने कर दें, लेकिन अपना हाथ न उठाएँ, क्योंकि हिंसा से हिंसा बढ़ती है। अहिंसा आग पर पानी का काम करती है। अपनी इसी विचारधारा के कारण महात्मा गांधी कई बार जेल गए, कई बार अंग्रेजों की बर्बरता का सामना करना पड़ा और अंग्रेज सैनिकों के डंडे खाने पड़े, किन्तु उन्होने कभी भी हिंसा का सहारा नहीं लिया और अपनी इसी रणनीति के आधार पर अंत में हमारे देश यानि भारत देश को स्वतंत्रता दिलाने में सफल हुए। अब प्रश्न उठता है कि गांधीवादी विचार धारा की सार्थकता कितनी थी या वर्तमान समय में कितनी है, तो इस बारे में जितने लोग उतनी बातें और जैसा



गांधीवादी विचारधारा की सार्थकता

चले गए, लेकिन पश्चात्पण उनके चेहरे पर साफ झलक रहा था। उस दिन मुझे वास्तविक एहसास हुआ कि अहिंसा कितना बड़ा शस्त्र है? इसीलिए गांधीजी के लिए लिखा गया कि 'दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना डाल, साबरमती के संततूने कर दिया कपाल!'

एन एन अग्रवाल

उम साहिब (सामान्य), परिचय देते, वर्गीकृत

एक अलसार्थी सुबह मेरी नींद टूट गई बहुत चिंतित व परेशान हो गया नींद नहीं आई शायद रात बुरा सपना देखा है। दुबारा सोने की कोशिश करने लगा परन्तु मन भटक रहा था, चिन्ता खाये जा रही थी। अंतः-नींद नहीं आई। तो सोचा चलो बहू भूलते पर उठ जायें, हाथ मुँह धोकर निपट कर चाय की चुस्की लगा कर योगसन किया जायें।

योग (जुड़ाव) हेतु आसन (बैठक) लगाया जाए किन्तु किससे जुड़ाव हेतु भगवान से जुड़ाव हेतु-काफ़ी देर बैठने के बाद भी मुझे भगवान से जुड़ने का दर्शन नहीं हो पा रहा था, तब मैंने पुनः प्रयास किया कि जब मैं भगवान का बच्चा हूँ, तब मुझमें भी भगवान का अंश होगा। मुझमें ही भगवान बैठे हैं, तब मैं भगवान को डूबर-डूबर क्यों खोजूँ? अपने मन में बैठे भगवान से बातें करूँ, क्योंकि उनके आदेशों के अनुसार ही सब कर्त्तव्य की पूर्ति के अनुसार ही सम्पन्न होता है। तो मैं इतना चिंतित व विचलित क्यों? जो भी है सब उनकी पूर्ति व इच्छा के अनुरूप हो रहा है तो जो होगा वह भगवान की इच्छा अनुसार ही होगा। भगवान अपने बच्चे को तकलीफ में कैसे देख सकते हैं? कोई माता या पिता अपने बच्चे को तकलीफ में रहे: खुद देख सकता है क्या? तो फिर मैं चिंतित क्यों होंगूँ?

मैं भगवान से बातें कर रहा था, किन्तु प्रत्युत्तर में भगवान से संबाद नहीं हो रहा था। मैंने माता से शिक्षायात कि भगवान भोलेनाथ मुझसे बातें नहीं कर रहे हैं। किन्तु भोलेनाथ की रूप्रा बिना बोले मेरे हर प्रश्न का उत्तर मेरे मन-मन में ही दे रहे थे। जैसे संसार में आपने भेजा है जिस काम के लिए उसमें मैं आत्मनिरीक्षण कर सकूँ कि पानहुआ था फेल, जैसे सांसारिक पढ़ाई में स्कुलो में प्रतिवर्ष परीक्षाएं आता है तथा बच्चे एक कक्षा से दूसरी कक्षा की ओर अग्रसर होते हैं, ताकि एक नये जोश व नई उमंग के साथ अगली कक्षा में पढ़ाई करे या फेल होने के कारणों



आत्म साक्षात्कार

को दूर करे व उसमें आवश्यक सुधार का पुनः परीक्षा दे। इसी प्रकार भगवान पग-पग बक्तों की परीक्षा लेते रहते हैं। परीक्षा का परिणाम भी आता है। इम ज़िन्दगी के नये रास्ते नये उसाह व उमंग के साथ पार करके अगले सोपान की ओर प्रवेश कर जाते हैं। जैसे-बचपन, जवानी, गृहस्थ आश्रम के बाद का एक कथ में प्रवेश सुन्दर सुशील मृदुभाषी जीवन साक्षी का योग, एक वी का मिलना, बच्चों की परवरिश, हम बच्चों को शिक्षा देते हैं कि इस सृष्टि में भगवान के कार्यों को करने हेतु विश्वबन्धुत्व का विकास सर्वव्य सुख हेतु जन कल्याण हेतु पहली पंक्ति में रहकर कार्य करना, स्थिरता देना व अंत में वानप्रस्थ की ओर गमन-मैंने कहा क्या प्रभु आपसे साक्षात्कार हो पायेगा? कभी भी किसी भी रूप में आप सामने आये तो पहचानूँगा कैसे? परिचय कराने वाला तो होना चाहिये। ये Mr. XYZ हैं,

यहाँ रहते हैं, आदि-आदि। भगवान की लीला देखिये, ये मुझसे बिना कहे ही, पूरक संबाद द्वारा मुझसे ही उत्तर पागेंगे रहे है कि परिचय के मोहातज नहीं रहोगे। पहचान लोगे। मैंने

कहा कैसे? उत्तर मिला दिव्य दृष्टि से, अन्ततया को दृष्टि से-मैंने कहा। प्रभु अभी क्यों नहीं? तपाक से उत्तर मिला-इसके लिए सद्बुद्धि चाहिये, वो कैसे मिलती है-गुरु से। विश्वबन्धुत्व की सद्भावना से, त्याग से प्रेम से या भक्ति मार्ग से, किसी भी मार्ग से निकल कर मेरे ही पास पहुँचोगे, जैसे पृथ्वी गोल है। घुपकर वहीं आते हैं जहाँ से चले थे। निरन्तर व सार्थक प्रयास से दिव्य दृष्टि मिलती है। तुम मुझे बिना माध्यम के मेरे साक्षात् दर्शन कर पहचान लोगे। इतना सुन मेरी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी पता नहीं क्यों? ये मेरी गलतियों-कामियों या सुश्रुतों के आँसू थे, जिन्हें मैं रोकना या पोछना नहीं चाहता था। जब मेरा आसन टूटा, तब मैंने अपने आप को तर्ताज़ा, शान्त व एक नई उमंग से भरा पाया। तो दोस्तों, ये था मेरा आत्म साक्षात्कार।

आत्मी कपूर, वरिष्ठ यात्री गाई, वर्गीकृत